अनुच्छेद लेखन

अनुच्छेद को अंग्रेजी में 'Paragraph' कहते हैं। अनुच्छेद लेखन एक ऐसी कला है जिसमें विषय से संबंधित सभी महत्वपूर्ण तथ्यों को ध्यान में रखकर निर्धारित शब्दों में लेखन कार्य किया जाता है। अनुच्छेद लेखन में किसी विषय पर विचार व्यक्त करने होते हैं। विचार व्यक्त करते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि विषय से संबंधित समस्त तथ्यों का समाहार उसमें हो जाए।

Topic Notes

- अंक विभाजन
- अनुच्छेद लेखन का प्रारूप

किसी एक भाव या विचार को व्यक्त करने के लिए लिखे गए सम्बद्ध और लघु वाक्य-समूह को अनुच्छेद लेखन कहते हैं। दूसरे शब्दों में, किसी घटना, दृश्य अथवा विषय को संक्षिप्त (कम शब्दों में) किन्तु सारगर्भित (अर्थपूर्ण) ढंग से जिस लेखन शैली में प्रस्तुत किया जाता है, उसे अनुच्छेद लेखन कहते हैं। अनुच्छेद की भाषा शैली सजीव एवं प्रभावशाली होनी चाहिए। शब्दों के सही चयन के साथ लोकोक्तियों एवं मुहावरों के समुचित प्रयोग से ही भाषा शैली में उपर्युक्त गुण आ सकते हैं। इसका मुख्य कार्य किसी एक विचार को इस तरह लिखना होता है, जिसके सभी वाक्य एक-दूसरे से बँधे होते हैं। एक भी वाक्य अनावश्यक और बेकार नहीं होना चाहिए। अनुच्छेद अपने-आप में स्वतन्त्र और पूर्ण होते हैं। अनुच्छेद का मुख्य विचार या भाव की कुंजी या तो आरम्भ में रहती है या अन्त में। उच्च कोटि के अनुच्छेद-लेखन में मुख्य विचार अन्त में दिया जाता है।

अनुच्छेद लेखन उच्चतम कला के नमूने होते हैं। किसी भी विषय पर स्वतंत्र रूप से लिखने की कला विकसित करने का अर्थ होता है 'भाषा पर सम्पूर्ण अधिकार, शब्दावली आदि का सहज, सार्थक प्रयोग।' अतः अनुच्छेद गद्य लेखन की वह विधा है, जिसके अंतर्गत किसी निर्धारित विषय पर संक्षेप में वे बातें कही जाती हैं जिनका पाठक के मन पर सीधा-सीधा प्रभाव पड़ता है। परीक्षा में 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखने के लिए आता है। इसकी अंक योजना इस प्रकार है—

अंक विभाजन	
भूमिका (आरंभ व समापन)	1 अंक
विषय वस्तु	3 अंक
भाषा	1 अंक
कुल अंक	5 अंक

अनुच्छेद लेखन का प्रारूप

भारतीय किसान के कष्ट

संकेत बिंदु :

- अन्नदाता की कठिनाइयाँ
- कठोर दिनचर्या
- सुधार के उपाय

किसान हमारा अन्नदाता है। गांधीजी ने भी कहा था—"भारत का ह्रदय गाँवों में बसता है। गाँवों में ही सेवा और परिश्रम के अवतार किसान बसते हैं। ये किसान ही नगरवासियों के अन्नदाता हैं, सृष्टि-पालक हैं।" भारतीय किसान की पतनावस्था का प्रमुख कारण निरक्षरता है। अपनी इसी निरक्षरता के कारण वह आज भी शोषण का शिकार हो रहा है। वह अपना सारा परिश्रम खेतों में अन्न उपजाने में लगा देता है और उसके परिश्रम का फल व्यापारी और साहूकार लूट लेते हैं। — आरंभ ½ अंक

किसान की दिनचर्या बहुत कठोर होती है। रात-दिन, सरदी-गरमी, बरसात की परवाह किए बिना वह लगातार कठोर परिश्रम करता है। अपना आराम त्यागकर वह हमारा पालन-पोषण करता है। रात-दिन कठोर परिश्रम करने पर भी वह अपनी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति तक नहीं कर पाता। उसकी दशा बद से बदतर है। फसलों की कम कीमत, ख़राब मौसम की मार के कारण उसकी दुर्दशा है। यदि किसान न हों तो हम भूखे मर जाएँ इसलिए हमें उनकी स्थिति सुधारने के लिए प्रयास करने चाहिए। — विषय वस्तु 3 अंक

सरकार को किसानों की स्थिति को सुधारने के लिए प्रयत्न करने चाहिए। उनके लिए लघु उद्योगों की व्यवस्था होनी चाहिए। कृषि को व्यावहारिक बनाने के लिए प्रयास किए जाएँ। उन्हें शिक्षित किया जाए जिससे वे आधुनिक तकनीक का लाभ उठा सकें और कृषि को आधुनिक बना सकें। — समापन ½ अंक

* भाषिक प्रस्तुतीकरण के लिए 1 अंक निर्धारित है।

स्मरणीय बिंदु

➥ *सामान्यतः 80-100 शब्दों का अनुच्छेद होना चाहिए।*

➥ *अनुच्छेद एक संक्षिप्त लेख शैली है जिसमें मुख्य विषय पर ही ध्यान केन्द्रित रखना चाहिए।*

➥ *इसमें उदाहरण के लिए कोई स्थान नहीं होता अतः उसकी ओर संकेत करना ही पर्याप्त है।*

➥ *सभी वाक्य आपस में सहसंबंधित होने चाहिए।*

➥ *प्रथम और अंतिम वाक्य सारगर्भित और प्रभावयुक्त होने चाहिए।*

➥ *भाषा की शुद्धता और शब्दों के चयन पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।*

➥ *विषय के सभी प्रमुख बिन्दुओं का समावेश होना चाहिए।*

➥ *मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग से अनुच्छेद को प्रभावी बनाने का प्रयास करना चाहिए।*

उदाहरण 1. **मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।**

- **निराशा अभिशाप**
- **दृष्टिकोण परिवर्तन**
- **सकारात्मक सोच**

मनुष्य का जीवन अनेक प्रकार की विविधताओं से भरा हुआ है। उसके जीवन में सुख है तो दुख भी है, आशा है तो निराशा भी है, सफलता है तो असफलता भी है। जिस प्रकार मौसम बदलता रहता है, उसी प्रकार मनुष्य के जीवन में परिस्थितियाँ भी बदलती रहती हैं। जिस प्रकार इन्द्रधनुष के लिए बारिश और धूप दोनों ही आवश्यक हैं, उसी प्रकार जीवन में सफलता पाने के लिए मनुष्य को खट्टे-मीठे अनुभवों का सामना करना पड़ता है। अत: मनुष्य को निराशा और अवसाद में जीवन नहीं जीना चाहिए। कई बार मनुष्य असफलताओं से घबराकर अपने लक्ष्य को ही छोड़ देता है। असफलता से हारकर मनुष्य को बैठना नहीं चाहिए बल्कि अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन लाना चाहिए। जैसे हर रात के बाद नया सवेरा आता है वैसे ही हर असफलता के पीछे सफलता छिपी हुई होती है। जो व्यक्ति हर हाल में आगे बढ़ने की चाह रखता है जिंदगी भी उसी के आगे नतमस्तक होती है। अत: हर बाधा से उबरने के रास्ते खोजते हुए आगे बढ़ते जाओ। अपने जीवन में उन्नति को प्राप्त करने के लिए मनुष्य को अपनी सोच को सकारात्मक रखना होगा। जो व्यक्ति आशावादी और कर्मवीर होता है वही अपने जीवन में सफल होता है। इस प्रकार का व्यक्ति हमेशा लक्ष्य को पाने के लिए प्रयासरत रहता है। इसके लिए आवश्यक है अपने मन को जीतना क्योंकि जब तक मन शिथिल है तब तक मनुष्य कुछ भी करने में सक्षम नहीं है।

उदाहरण 2. **स्वास्थ्य की रक्षा**

- **आवश्यकता**
- **पोषक भोजन**
- **लाभकारी सुझाव**

'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ बुद्धि निवास करती है।' यह कथन अक्षरश: सत्य है। वास्तव में स्वास्थ्य से बढ़कर कोई उत्तम धन नहीं है। स्वास्थ्य है तो हम हैं, हमारा अस्तित्व है। दुनिया का कोई भी धन इस स्वास्थ्य रूपी अमूल्य धन का मुकाबला नहीं कर सकता। यदि मनुष्य का स्वास्थ्य सही रहेगा तो उसकी बुद्धि भी समुचित रूप से कार्य करेगी। अच्छे स्वास्थ्य का तो कोई मुकाबला ही नहीं है। स्वास्थ्य सही रहने से शरीर में चुस्ती-फुर्ती आती है, मस्तिष्क सही कार्य करता है और शरीर बलशाली बनता है। जब शरीर बलशाली बनेगा तो हम प्रत्येक कार्य को पूरी लगन और तल्लीनता से करेंगे। स्वस्थ शरीर के लिए आवश्यक है कि हम पोषक भोजन करें। इसके लिए अपने खाने में हरी सब्जियाँ, ताज़ा फल, सलाद, दूध, दही आदि संतुलित आहारों का समावेश करें। भोजन-निर्माण की प्रक्रिया को स्वच्छ और निर्मल रखें। डिब्बाबंद खाद्य पदार्थ, जंक फूड आदि से दूर रहें। व्यक्तिगत स्वच्छता का भी ध्यान रखें और अपने स्वास्थ्य की नियमित जाँच करवाते रहें। इसके साथ-साथ नियमित योग और शारीरिक व्यायाम का अभ्यास करें तथा भरपूर पानी पिएँ। पर्याप्त निद्रा लें तथा ऋतु के अनुसार खान-पान का चुनाव करें। इससे हम शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक स्तर पर स्वस्थ रहेंगे और एक स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकेंगे। याद रखें कि अच्छा स्वास्थ्य ही जीवन का अमूल्य उपहार है।

वर्णनात्मक प्रश्न

निम्नलिखित संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 80 से 100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए—

1. महानगरों में महिलाओं की सुरक्षा

- **जीवन शैली**
- **कामकाजी महिलाओं की समस्या**
- **सुरक्षा में कमियों के कारण व सुझाव**

उत्तर : भारत देश में महिलाओं की सुरक्षा का मुद्दा बेहद महत्वपूर्ण विषय है। हमारा देश हिंदुस्तान सम्पूर्ण विश्व में अपने अलग-अलग रीति-रिवाजों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ प्राचीन काल से ही महिलाओं को समाज में विशेष आदर और सम्मान दिया जाता है। भारतीय संस्कृति में महिलाओं को देवी का दर्ज़ा दिया गया है। अगर हम इक्कीसवीं सदी की बात करें तो आज महिलाएँ हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर काम कर रही हैं। वे आज जागरूक हो रही हैं। आज हमारे देश में महानगरों में रहने वाली महिलाएँ अलग-अलग व्यवसायों में लगी हुई हैं और अपना जीवनयापन करने में सक्षम हैं। वे किसी पर निर्भर नहीं हैं और घर से बाहर निकलकर देश की प्रगति में अपना सक्रिय योगदान दे रही हैं। पर खेद का विषय है कि इतनी प्रगति के बाद भी आज महिलाएँ सुरक्षित नहीं है। अपने काम के सिलसिले में उन्हें बाहर भी जाना पड़ता है, कई बार वे रात को देर से घर लौटती हैं। पुरुषों का देर रात तक ऑफिस में काम करना तो आम बात है पर महिलाओं का देर रात घर लौटना चिंता का विषय है क्योंकि आज भी वे सुरक्षित नहीं है। जिस गति से महिलाओं की प्रगति बढ़ रही है उसी गति से देश में अपराध भी बढ़ते जा रहे हैं। अपराधों के बढ़ने का प्रमुख कारण है सुरक्षा व्यवस्था में कमी होना। अत: महिलाएँ सुरक्षित होने का अनुभव ही नहीं कर पातीं। उनके ऊपर अपराध का डर काले साये के समान मँडराता रहता है। किसी महिला को बीच राह में अकेला देखकर अपराधी की हिम्मत भी बढ़ जाती है क्योंकि उसे लगता है कि वह तो अबला नारी है। समाज पीड़ित महिला को हीन दृष्टि से देखता है, सारे लाँछन भी उसी पर लगते हैं। अपराधी को कोई नहीं कहता कि उसकी सोच गलत है, महिला के रहने और काम करने का तरीका नहीं। देश में महिलाओं की सुरक्षा के लिए कानून तो बने हैं पर वे अपराधी को वैसी सज़ा नहीं देते जिसका वह हक़दार है। अत: देश में महिलाओं की सुरक्षा के लिए नागरिकों का जागरूक होना अपेक्षित है।

2. परिश्रम और अभ्यास— सफलता की कुंजी

- **परिश्रम का महत्व**
- **परिश्रम के अनुकरणीय उदाहरण**
- **परिश्रम और अभ्यास से सफलता**

उत्तर : मानव जीवन में परिश्रम का बहुत महत्व है। परिश्रम ही व्यक्ति को छोटे से बड़ा बनाता है। सभी कार्यों की सफलता परिश्रम पर ही निर्भर करती है। दृढ़ संकल्प लेकर कठोर परिश्रम करना ही सफलता का परिचायक है। प्राचीन काल से आधुनिक काल तक ग्रामों, नगरों, मशीनों, शिल्प आदि का विकास परिश्रम से ही संभव हुआ है। परिश्रम के बिना संसार की कल्पना ही नहीं की जा सकती। सफलता परिश्रमी व्यक्ति की अनुचर है। परिश्रम मानव में नवीन उत्साह और उमंग का संचार करता है। जो लोग परिश्रम नहीं करते उनका जीवन सदैव दुख और कष्टों से भरा हुआ रहता है। संसार इस बात का साक्षी है कि जिस राष्ट्र के नागरिक परिश्रमी होते हैं, वह राष्ट्र सदैव उन्नति प्राप्त करता है। जिस प्रकार रस्सी की रगड़ से कुएँ के मज़बूत पत्थर पर भी निशान पड़ जाता है उसी प्रकार निरंतर परिश्रम कठिन से कठिन कार्य को भी सफल बना देता है। महात्मा गांधी, सुभाषचन्द्र बोस, तिलक, चन्द्रशेखर आज़ाद आदि क्रांतिकारियों के अथक परिश्रम के फलस्वरूप ही आज हम स्वतंत्र भारत में साँस ले पा रहे हैं। प्रकृति के कण-कण से हमें परिश्रम और अभ्यास करने की सीख मिलती है। एक छोटी-सी चींटी का जीवन परिश्रम से भरपूर होता है। इसी प्रकार नदियाँ भी दिन-रात अनवरत बहती रहती हैं। जिस प्रकार शेर को बिना परिश्रम के शिकार नहीं मिलता उसी प्रकार मनुष्य को भी बिना परिश्रम के सफलता नहीं मिलती। एक कवि के शब्दों में परिश्रम की महिमा का गुणगान इस प्रकार हुआ है—

"विश्वास करो
यह सबसे बड़ा देवत्व है कि—
तुम पुरुषार्थ करते मनुष्य हो
और मैं स्वरूप पाती मृत्तिका।"

3. **परीक्षा से पहले मेरी मनोदशा**
- **परीक्षा नाम से भय**
- **परीक्षा की तैयारी**
- **प्रश्न-पत्र देखकर भय दूर हुआ**

उत्तर : परीक्षा वह शब्द है जिसे सुनते ही अच्छे-अच्छों के माथे पर पसीना आ जाता है। परीक्षा का नाम सुनते ही मेरा भी भयभीत होना स्वाभाविक है। ज्यों-ज्यों परीक्षा की घड़ी निकट आती जा रही थी त्यों-त्यों यह घबराहट और भी बढ़ती जा रही थी। जितना भी पढ़ता था घबराहट में सब भूला-सा महसूस हो रहा था। खाने-पीने में भी अरुचि-सी हो रही थी। इस घबराहट में न जाने कब 'जय हनुमान ज्ञान गुण सागर' उच्चरित होने लगता था। यद्यपि मैं अपनी तरफ से परीक्षा का भय भूलने और सभी प्रश्नों के उत्तर दोहराने की तैयारी कर रहा था और जिन प्रश्नों पर तनिक भी आशंका होती तो उन पर निशान लगाकर पिताजी से शाम को हल करवा लेता था पर मन में कहीं न कहीं भय तो था ही। परीक्षा का दिन आखिर आ ही गया। सारी तैयारियों को समेटे मैं परीक्षा भवन में चला गया पर प्रश्न-पत्र हाथ में आने तक मन में तरह-तरह की आशंकाएँ आती-जाती रहीं। मैंने अपनी सीट पर बैठकर आँखें बंद कर लीं। प्रश्न-पत्र मिलने का इंतज़ार करने पर घबराहट के साथ-साथ दिल की धड़कनें तेज़ हो गईं। इसी बीच घंटी बजी। कक्ष निरीक्षक ने पहले हमें उत्तर-पुस्तिकाएँ बाँटी फिर दस मिनट बाद प्रश्न-पत्र दिया। काँपते हाथों से मैंने प्रश्न-पत्र लिया और पढ़ना शुरू किया। शुरू के पन्नों के चारों प्रश्नों को पढ़कर मेरी घबराहट आधी हो गई क्योंकि उनमें से चारों के जवाब मुझे आते थे। पूरा प्रश्न-पत्र पढ़ा। अब मैं प्रसन्न था क्योंकि एक का उत्तर छोड़कर सभी के उत्तर लिख सकता था। मेरी घबराहट छू-मंतर हो चुकी थी। अब मैं लिखने में व्यस्त हो गया।

4. **@दुविधा में दोनों गए, माया मिली न राम।**
- **उक्ति का अर्थ**
- **एक लक्ष्य से सफलता संभव**
- **दो लक्ष्यों से दुविधा**
- **दुविधा से शक्तियों का बँटवारा**
- **भ्रम, अपना मत**

5. **जंक फूड**
- **जंक फूड क्या होता है**
- **युवा पीढ़ी और जंक फूड**
- **जंक फूड खाने के दुष्प्रभाव**

उत्तर : जंक फूड दिखने में तो आकर्षक होता है लेकिन स्वास्थ्य के लिए बिलकुल भी अच्छा नहीं होता है। इसका प्रचलन विश्व में बढ़ता जा रहा है। जंक फूड के अंतर्गत पिज्जा, बर्गर आदि आते हैं जोकि हमारे जीवन का एक अहम हिस्सा बन चुके हैं। पहले लोग कभी-कभी ही बाहर जंक फूड खाने जाया करते थे लेकिन अब ये हमारी दिनचर्या का हिस्सा बन चुके हैं। जंक फूड का सबसे ज्यादा सेवन बच्चों और युवाओं के द्वारा किया जाता है क्योंकि वे पश्चिमी सभ्यता को अपनाने में अपनी शान समझते हैं। दूसरा जंक फूड उन्हें स्वादिष्ट लगते हैं और बहुत ही आकर्षक होते हैं। स्वस्थ जीवन के लिए हर व्यक्ति को संतुलित आहार की जरूरत होती है जिसमें उचित मात्रा में प्रोटीन, विटामिन और मिनरल हो। जंक फूड में प्रोटीन तत्व नहीं होते हैं जोकि स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। इससे स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जंक फूड की बढ़ती खपत के कारण लोगों में मोटापे की समस्या बढ़ती जा रही है। घर की तरह बाहर का भोजन साफ-स्वच्छ नहीं होता है। वह गली-सड़ी सब्जियों से बनाया जाता है और उसे खाकर हम बीमार पड़ जाते हैं। इसमें कैलेस्ट्रोल की मात्रा बहुत ही ज्यादा होती है जिससे हृदय से जुड़े रोग हो जाते हैं। कभी-कभी जंक फूड खाना ठीक है लेकिन हमें रोज इसका सेवन नहीं करना चाहिए। हमें चाहिए कि हम घर पर ही रंग-बिरंगा और स्वादिष्ट भोजन बनाएँ। घर पर बने आलू के चिप्स आदि खाएँ और हो सके तो पिज्जा आदि बनाने के लिए ताजा सब्ज़ियों का प्रयोग करें। जंक फूड यानि कि फास्ट फूड जोकि बहुत ही प्रचलन में है। हमें इसका सेवन बहुत कम करना चाहिए। माता-पिता को बच्चों को बचपन से ही अच्छे भोजन की आदत डालनी चाहिए। जंक फूड में ज्यादा पैसे भी खर्च होते हैं और साथ ही स्वास्थ्य को भी हानि होती है। हमें अपनी खाने की दिनचर्या बनानी चाहिए जिसमें हफ्ते में एक बार ही जंक फूड होना चाहिए। हमें संतुलित आहार लेना चाहिए क्योंकि जंक फूड सिर्फ मजबूरी में खाया जाता है जब हम कहीं बाहर हों। बाहर आते-जाते समय भी हो सके तो घर से ही भोजन लेकर जाएँ और जंक फूड को छोड़कर शुद्ध भोजन खाने की आदत को अपनाएँ।

6. विद्यालयों की ज़िम्मेदारी— बेहतर नागरिक सोच
- विद्यालय की आवश्यकता
- विद्यालय का कर्तव्य
- विद्यार्थी का दायित्व

उत्तर : बच्चे की प्रथम पाठशाला घर होती है। अपनों के संपर्क में वह घर में बोलना, चलना सीखता है। इसके बाद जब वह विद्यालय जाने की आयु में पहुँचता है, तब माता-पिता उसका दाखिला वहाँ करवाते हैं। विद्यालय का प्रथम कर्तव्य बालक को घर और संसार से जोड़ना है। बालक में उत्तम चरित्र, रुचियों आदि का विकास करने में विद्यालय की अहम भूमिका होती है। उसके अंदर सहयोग, परोपकार, सहनशीलता आदि गुणों का विकास होता है और साथ ही वह अच्छा नागरिक बनता है। एक विद्यालय ही बालक को जीवन की जटिल परिस्थितियों का सामना करने के योग्य बनाता है, उसके अंदर कर्तव्य बोध जगाता है। इस प्रकार अपने अंदर अच्छे गुणों का विकास कर बालक समाज का एक ज़िम्मेदार नागरिक बनता है। राष्ट्र और समाज के प्रति भी एक व्यक्ति के कुछ कर्तव्य होते हैं, जिनका निर्वाह वही कर सकता है जो एक कुशल विद्यार्थी होता है। एक पढ़ा-लिखा व्यक्ति ही अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सजग होता है। यदि मनुष्य को अपने दायित्वों का बोध होता है तो वह समाज, राष्ट्र की उन्नति में सहयोग प्रदान कर सकता है। निरक्षरता सबसे बड़ा अभिशाप है। एक शिक्षित व्यक्ति ही अपनी उन्नत सोच के माध्यम से सफलता की नई ऊँचाइयों को छूता हुआ राष्ट्र को शिखर तक ले जाने में सक्षम होता है।

7. @युवाओं के लिए मतदान का अधिकार
- मतदान का अधिकार
- सभ्य समाज की अरुचि
- मतदान के प्रति जागरूकता
- अनिवार्य मतदान के लिए प्रयास

8. मीडिया की भूमिका
- मीडिया का प्रभाव
- सकारात्मकता और नकारात्मकता
- अपेक्षाएँ

उत्तर : मीडिया हमारे चारों ओर उपस्थित है और उसके प्रभाव से कोई भी अछूता नहीं है। टीवी में हम जो देखते हैं, रेडियो पर हम जो सुनते हैं, समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं में हम जो पढ़ते हैं वह सब मीडिया है। मीडिया हमारा सबसे करीबी है इसलिए उसके प्रभाव से मुक्त नहीं हुआ जा सकता। समाज पर इसका बहुत प्रभाव पड़ता है। मीडिया समाज का निर्माण और पुनर्निर्माण करता है। देश को अंग्रेजों की वर्षों की गुलामी से मुक्ति दिलाने में मीडिया की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। मीडिया का प्रमुख कार्य जनजागरण और समय-समय पर नागरिकों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक कराना है। प्रत्येक सिक्के के दो पहलू के समान ही मीडिया के भी सकारात्मक और नकारात्मक दो पहलू हैं। मीडिया के द्वारा लोगों को शिक्षा मिलती है, बच्चों के ज्ञान में वृद्धि होती है, देश-दुनिया में घटित घटनाओं का बोध हमें होता है। आज हमारे समाचार-पत्र अपराधों की खबरों से भरे हुए होते हैं। टीवी पर तो जैसे पैसे कमाना ही लोगों का एकमात्र उद्देश्य रह गया है और वह अश्लीलता दिखाने से भी पीछे नहीं रहते। सोशल मीडिया पर अधिक समय बिताने के कारण बच्चों के दिमाग पर जोर पड़ता है। मीडिया वाले अपनी लोकप्रियता बढ़ाने हेतु सच को छिपा लेते हैं। मीडिया को समाज में जागरूकता उत्पन्न करने वाले साधन के रूप में देखा जाता है इसलिए मीडिया का प्रमुख कर्तव्य है लोगों को सच दिखाना और जनहित के लिए कार्य करना। अतः उन्हें इस प्रकार के कार्यक्रम दिखाने चाहिए जिससे लोगों को कोई प्रेरणा मिल सके और वे कुछ सीख लेकर आगे बढ़ सकें।

9. सफलता की कुंजी— मन की एकाग्रता
- मन की एकाग्रता क्या और क्यों?
- सफलता की कुंजी
- सतत अभ्यास

उत्तर : मन की एकाग्रता पर ही प्रत्येक व्यक्ति की सफलता निर्भर करती है। यदि व्यक्ति का मन एकाग्र है तो वह अपने सामने आने वाली हर परेशानी को चुटकियों में सुलझा सकता है। अपनी मानसिक और भावनात्मक ऊर्जा को किसी एक काम में लगाना ही एकाग्रता है। एकाग्रता से ही मनुष्य के अंदर किसी एक विषय के प्रति ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता का विकास होता है। जीवन में सफलता का मूलमंत्र ही मन की एकाग्रता है। इसके अभाव में व्यक्ति उन्नति ही नहीं कर पाता। यदि मनुष्य का मन एकाग्र रहेगा तो वह अपने सामने आने वाली हर कठिनाई का समाधान करने में सफल रहेगा। व्यक्ति की सुप्त शक्तियों को जागृत कर उसे हर विपरीत परिस्थिति से संघर्ष करने की प्रेरणा हासिल होना भी मन की एकाग्रता का ही परिणाम है इसलिए एकाग्रता को सफलता की प्रथम कुंजी कहा गया है। यदि व्यक्ति पूरी एकाग्रता के साथ अपना कार्य संपन्न करता है तो दुनिया की कोई भी ताकत सफलता को उसके कदम चूमने से नहीं रोक सकती। एकाग्रता के लिए शांत वातावरण और मन की शांति का होना अत्यावश्यक है। विद्यार्थी जीवन में तो मन की एकाग्रता बहुत आवश्यक है क्योंकि विद्यार्थी अपने लक्ष्य को तभी प्राप्त कर सकता है जब उसका मन एकाग्र हो और मन की एकाग्रता के लिए सतत अभ्यास जरूरी है। यदि व्यक्ति अभ्यास नहीं करेगा तो उसे सफलता नहीं मिलेगी। सतत अभ्यास ही मन को एकाग्र करने में सहायक है और इसी पर व्यक्ति की सफलता निर्भर होती है।

10. बीता समय फिर नहीं लौटता

- समय का महत्व
- समय नियोजन
- समय गँवाने की हानियाँ

11. मनोरंजन का महत्व

- विविध प्रकार
- स्वस्थ मनोरंजन ही वास्तविक
- समयावधि और महत्व

उत्तर : आधुनिकता के इस दौर में मनुष्य एक मशीनी रोबोट के समान निरंतर काम करने में लगा हुआ है। ऐसे में केवल काम ही काम करते-करते उसका जीवन नीरस और उबाऊ होने लगा है। ऐसा प्रतीत होता है कि उसके जीवन के रंग जैसे समाप्त होने को हों। जीवन से इस नीरसता और उबाऊपन को समाप्त करने के लिए मनोरंजन का होना अत्यावश्यक है। ऐसे में उसे इस प्रकार के साधनों की आवश्यकता होती है जो अल्प समय में ही उसके उदास और निराश मन को सुकून और खुशी के कुछ पल मुहैया करवा सकें। शरीर के साथ-साथ अपने मन को प्रसन्न रखने और उसे स्फूर्ति प्रदान करने में मनोरंजन अत्यंत सहायक है। वर्तमान समय में मनोरंजन के लिए अनेक साधन उपलब्ध हैं, जैसे - टेलीविज़न, रेडियो, कवि-सम्मेलन, क्रिकेट, फुटबॉल, कैरम, शतरंज, क्रिकेट, कबड्डी, फुटबॉल, बैडमिंटन आदि । मनोरंजन स्वस्थ होना चाहिए क्योंकि स्वस्थ मनोरंजन ही व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होता है। मनोरंजन से व्यक्ति तनाव मुक्त हो जाता है और वह तन-मन से भी प्रसन्नता का अनुभव करता है। मनोरंजन में सबसे अहम होता है समय का ध्यान रखना क्योंकि हमेशा मनोरंजन में डूबा रहने वाला व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाता है। अत: मनोरंजन के साथ-साथ लक्ष्य प्राप्ति के लिए भी प्रयास करते रहना चाहिए। यदि व्यक्ति समय का पालन नहीं करेगा तो वह अकर्मण्य हो जाएगा। अत: स्पष्ट है कि आज के व्यस्तता भरे जीवन में व्यक्ति को तनाव मुक्त रखने में मनोरंजन का अत्यंत महत्व है। जब व्यक्ति स्वस्थ एवं प्रसन्न रहेगा तब ही वह सफलता की ओर अग्रसर रहेगा।

12. आधुनिक जीवन

- आवश्यकताओं में वृद्धि
- अशांति
- क्या करें?

उत्तर : आज का जीवन पूरी तरह आधुनिक हो गया है। मनुष्य ने स्वयं को इतना आधुनिक बना लिया है कि वह बिना मशीनों के रह ही नहीं सकता। उसकी इसी आधुनिकता ने उसे आज विभिन्न रोगों से ग्रसित कर दिया है। उसकी कार्यशैली इतनी परिवर्तित हो चुकी है कि वह अनजाने ही कमर दर्द, मोटापे, तनाव और अवसाद से घिर गया है। देश की इसी आधुनिकता की देन हैं बेरोजगारी, आतंकवाद, महँगाई और भ्रष्टाचार। मनुष्य ने खुद को आधुनिक तो बना लिया है पर अपनी रूढ़िवादिता को वह पूर्णरूप से भुला नहीं पाया है। आज बच्चों की रचनात्मकता जैसे कहीं खो गई है और वे मोबाइल, इन्टरनेट आदि के गुलाम बन

गए हैं। किशोर और युवाओं में बढ़ती हुई आपराधिक प्रवृत्ति के लिए भी कहीं न कहीं यही आधुनिकता दोषी है। अपनी निरंतर बढ़ती हुई आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यक्ति अपनी शारीरिक क्षमताओं से बढ़कर प्रयास करता है और उनकी पूर्ति नहीं हो पाने पर अवसाद से घिर जाता है, हतोत्साहित हो जाता है। परिणामस्वरूप वह शारीरिक और मानसिक रूप से रुग्ण हो जाता है। सोशल मीडिया ने तो व्यक्ति को काफी हद तक बदलकर रख दिया है। देर रात तक जागना और सुबह देर तक सोने की वजह से आज का युवा चिड़चिड़ा और अपने भविष्य के प्रति सशंकित रहने लगा है। इससे बचने के लिए आज युवा को जागरूक होना चाहिए। माता-पिता को अपने बच्चों को सहनशीलता, दयालुता, करुणा और सहयोग आदि मानवीय गुणों की शिक्षा देनी चाहिए और उनके साथ ज्यादा-से-ज्यादा समय बिताना चाहिए। इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि बच्चों को आधुनिकता से दूर रखा जाए बल्कि उन्हें आधुनिक के साथ-साथ एक अच्छा नागरिक बनने के गुण प्रदान किए जाएँ।

13. स्वच्छता आन्दोलन

- **क्यों?**
- **बदलाव**
- **हमारा उत्तरदायित्व**

उत्तर : स्वच्छता न केवल हमारे घर या सड़क तक के लिए आवश्यक होती है बल्कि देश और राष्ट्र की आवश्यकता होती है। इस अभियान की शुरूआत भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की 145वीं वर्षगांठ के अवसर पर 2 अक्टूबर 2014 को की थी। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भारत को एक स्वच्छ भारत बनाने का सपना देखा और इसके लिए कठिन प्रयास किए। इस मिशन का उद्देश्य सभी ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में सफाई कर एक आदर्श देश का उदाहरण प्रस्तुत करना है। इसका उद्देश्य दैनिक जीवन में लोगों की सभी अस्वस्थ आदतों को समाप्त करना है। देश के नागरिकों के भौतिक, मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक कल्याण के लिए इसका एहसास होना आवश्यक है। यदि देश स्वस्थ होगा, वहाँ के लोग स्वस्थ होंगे तो उस देश को उन्नति करने से कोई नहीं रोक सकता। आज पूरी दुनिया में देश की छवि ऐसी बनी हुई है कि यहाँ सर्वाधिक अस्वच्छता है। अस्वच्छता से हानियाँ भी कई हैं। इनमें सबसे पहले तो देश के लोगों का स्वास्थ्य ही है। एक समय में विश्वगुरु रहा हमारा देश शायद आज इसलिए अन्य देशों से पिछड़ रहा है क्योंकि हम अपने देश को स्वच्छ नहीं रख पा रहे। अस्वच्छता को रोकने के लिए हमें आगे आना होगा। युवा पीढ़ी को यह बीड़ा उठाना होगा। केवल भाषण देने और कोरी कल्पना करने से देश स्वच्छ नहीं होगा बल्कि इसके लिए सबको मिलजुल कर प्रयास करने होंगे। ग्रामीण इलाकों में गाँववासियों को जागरूक करना होगा। उन्हें साफ़-सफाई का महत्व बताना होगा तभी वे इस दिशा में अपने कदम बढ़ा पाएँगे। कुल मिलाकर सार यही है कि वर्तमान समय में स्वच्छता हमारे लिए एक बड़ी आवश्यकता बन गई है। यह समय परिवर्तन का है और यदि हम स्वच्छता में ही पिछड़ गए तो आर्थिक उन्नति का भी कोई महत्व नहीं।

14. @परोपकार

- **अर्थ**
- **आवश्यकता**
- **लाभ**
- **सर्वोत्तम गुण**

15. पुस्तकें पढ़ने की आदत

- **पढ़ने की घटती प्रवृत्ति**
- **कारण और हानि**
- **पढ़ने की आदत से लाभ**

उत्तर : कहा गया है कि पुस्तकें मनुष्य की सच्ची मित्र होती हैं। वे आजीवन उसका साथ निभाती हैं। पुस्तकों से मनुष्य को ज्ञान का एक नया आयाम मिलता है। यही ज्ञान मनुष्य के चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वह जितनी अधिक पुस्तकें पढ़ता है उतनी ही उसकी ज्ञान-पिपासा बढ़ती जाती है। आजकल पढ़ने की यही प्रवृत्ति घटती जा रही है। आजकल सब कुछ इन्टरनेट पर आसानी से मिल जाता है इसलिए आजकल लोग पुस्तकें कम पढ़ते हैं। वे चाहते हैं कि कम समय में ही बिना परिश्रम के उन्हें सब कुछ मिल जाए। बच्चे, युवा इसका ज्यादा उपयोग करते हैं। अनेक बार इन्टरनेट पर बहुत कुछ ऐसा भी सामने आ जाता

है जो हमारे हित के लिए नहीं है। हम यह भूल गए हैं कि पुस्तकें पढ़ने की आदत को अपनाकर हम अन्धकार से प्रकाश की ओर जा सकते हैं। पुस्तकें ही सही मायनों में हमारी सच्ची मित्र, पथ प्रदर्शक और गुरु हैं। इन्हें अपनाकर हम अपने ज्ञान को बढ़ाकर उन्नति के मार्ग तक पहुँच सकते हैं।

16. कंप्यूटर— हमारा मित्र

- **क्या है?**
- **विद्यार्थियों के लिए उपयोग**
- **सुझाव**

उत्तर : विज्ञान ने अनेक नए-नए आविष्कार किए हैं। कंप्यूटर भी ऐसे ही आविष्कार की देन है। कंप्यूटर बेहद ही भरोसेमंद और प्रयोग में भी आसान है। इसने हमारे जीवन को बहुत ही आसान बना दिया है। इसके माध्यम से किसी भी सूचना का पलभर में ही आदान-प्रदान किया जा सकता है। इसने विद्यार्थियों के गृहकार्य को आसान बना दिया है। यह मनोरंजन में भी सहायक है। कंप्यूटर ने कार्यालयों के कार्यों को भी सरल बना दिया है। भारत सरकार ने तो इसे शिक्षा का अनिवार्य अंग बना दिया है। इसके बिना तो जीवन अब असंभव-सा हो गया है। आज इसका प्रयोग हर क्षेत्र में हो रहा है। बैंक, ऑफिस, स्कूल, कॉलेज प्रत्येक स्थान पर आज कंप्यूटर ने हर कार्य को सरल बना दिया है। यह विद्यार्थियों की कौशल वृद्धि में भी सहायक है। जिस प्रकार हर वस्तु के लाभ और हानि होते हैं वैसे ही कंप्यूटर के भी हैं। बच्चे अपना अधिक समय इस पर खेलकर बिताते हैं। इससे उनकी आँखों पर बुरा असर पड़ता है। अत: इसका सीमित उपयोग करना चाहिए।

17. Ⓐसॉफ्ट स्किल (व्यवहार कौशल)

- **आशय**
- **आवश्यकता**
- **महत्व**

18. यात्राएँ : अनुभव के नए क्षितिज

- **यात्राओं का महत्व**
- **नए-नए स्थानों को जानना**
- **शिक्षाप्रद और मनोरंजक**

उत्तर : यात्राएँ तथा सफ़र बहुत रोमांचित करते हैं। ये हमें नए स्थानों पर जाने तथा नए लोगों से मिलने का अवसर प्रदान करते हैं। जो जानकारी हमें इनसे मिलती है वह सीधी-सटीक तथा कभी न भूलने वाली होती है। हम चीजों की हर बारीकी को समझ लेते हैं। इनसे हमें जो अनुभव प्राप्त होता है वह सर्वोत्तम तथा साफ होता है। इसलिए हमें शिक्षा के लिए यात्रा को अपने जीवन का एक भाग बना लेना चाहिए। नए स्थानों पर यात्रा करने से हमारी परीक्षण शक्ति बढ़ जाती है। जब हम नए स्थान पर जाते हैं तो हम उसे पूर्ण रूप से समझ पाते हैं। हमारे मन में एक ऐसी तस्वीर बन जाती है जिसे हम कभी भी भुला नहीं पाते। जिन स्थानों पर हम नहीं जाते उनके बारे में भी जानने का हमारा रुझान बढ़ जाता है। हम अपनी आँखों तथा दिमाग का पूरा प्रयोग करते हैं। इसके फलस्वरूप हम दिमागी रूप से सतर्क तथा चुस्त बनते हैं। यात्रा हमें नए लोगों से मिलने तथा उनके जीवन जीने के ढंग को जानने में मदद करती है। इस प्रकार ऐसे लोगों से मिलना जो अलग भाषाएँ बोलते हैं तथा अलग-अलग प्रकार के वस्त्र पहनते हैं, बहुत ही खूबसूरत लगता है। हमें नए दोस्त बनाने का अवसर मिलता है। हमें लगता है कि हम मानव नाम के एक बड़े परिवार का हिस्सा हैं। हमारे मन में एक-दूसरे के लिए सांत्वना तथा अपनापन जागता है। यात्रा हमें प्रकृति के समीप लेकर जाती है। हम प्रकृति को हर रूप में देख पाते हैं। हमें बड़े-बड़े ऊँचे पहाड़ देखने को मिलते हैं। खूबसूरती, रंग तथा शांति जोकि इस प्रकृति में शामिल है, हमारी आँखों को आनन्दित कर देते हैं। कुछ समय के लिए हम अपनी रोज की चिन्ताओं को भूल जाते हैं। यात्रा हमारी जिन्दगी में जीवन तथा कला को लेकर आती है। जो भी जानकारी हमें ऐतिहासिक इमारतों, कला तथा चीजों के बारे में है वह केवल किताबी तथा अपूर्ण है। किन्तु यात्रा हमें सीधे हाथ जानकारी प्रदान करती है। हमें यह पता चलता है कि जीवन रोमांचपूर्ण है। इस प्रकार यात्रा शिक्षण तथा मनोरंजन दोनों प्रदान करती हैं।

TOPPER'S CORNER

वर्णनात्मक प्रश्न

1. दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर किसी एक विषय पर लगभग 80-100 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए।

परोपकार

- आवश्यकता
- लाभ
- जीवन में कितना सम्भव

उत्तर

'परोपकार' शब्द दो शब्दों के मेल से बना है — 'पर' और 'उपकार', जिसका अर्थ है, दूसरों का उपकार या दूसरों की सहायता। मनुष्य सामाजिक और विवेकशील प्राणी है, जिसे सहानुभूति लेने तथा देने, दोनों की आवश्यकता होती है। दूसरों की सहायता को ही परोपकार कहते हैं, तथा ऐसा करने वाला मनुष्य सबसे श्रेष्ठ होता है क्योंकि परोपकार ही श्रेष्ठतम मानवीय गुण है। इस गुण के बिना मनुष्य पशु-तुल्य होता है। परोपकार करने से कोई हानि नहीं होती, वरन् लाभ अनेक होते हैं। इससे मानवीय सौहार्द का विकास होता है तथा उपकार करने, और उपकृत — दोनों के संबंध को और मज़बूत करता है। इससे न केवल उपकार पाने वाला व्यक्ति धन्य होता है, बल्कि उपकार करने वाले के हृदय में भी दया और इन्सानियत की लहर दौड़ जाती है। परन्तु आज के कलयुग में परोपकार जितना आवश्यक है, उतना अनावश्यक भी। समाज में कई ऐसे लोग पाए जा सकते हैं जो उपकार-प्राप्ति की आड़ में रहते हुए अनचाहा फ़ायदा भी उठा लेते हैं। हमें परोपकारी तो रहना चाहिए, परन्तु ऐसे लोगों को भी ध्यान में रखना चाहिए और सही निर्णय लेते हुए कदम उठाना चाहिए। अंत में इस महान गुण के विषय में यही कहा जा सकता है कि — "परहित सरिस धरम नहीं भाई।"

[CBSE Topper 2014]

2. दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर किसी एक विषय पर लगभग 80-100 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए।

हमारा देश

- भौगोलिक विस्तार
- समाज और संस्कृति
- आज का बदलता रूप

उत्तर

(क.) हमारा देश

"जहाँ डाल-डाल पर सोने की
चिड़िया करती है बसेरा,
वो भारत देश है मेरा,
वो भारत देश है मेरा।"

सोने की चिड़िया कहलाने वाला हमारा भारत विश्व का अद्वितीय राष्ट्र है। [redacted] क्षेत्रफल के अनुसार भारत सातवें स्थान पर है। भारत का भौगोलिक विस्तार बहुत विशाल है। भारत संसार का [redacted] सर्वाधिक त्योहार मनाने वाला राष्ट्र है। यहाँ विभिन्न धर्म, जाति, संप्रदाय, आदि को मानने वाले, नाना प्रकार के भाषा

[CBSE Topper 2015]

बोलने वाले नागरिक वास करते हैं। भारत का इतिहास, वेद-पुराण, दर्शनीय स्थल, विभिन्न व्यंजन, आदि विश्व-विख्यात हैं। विदेशी भारत की संस्कृति को देख आश्चर्यचकित रह जाते हैं। परंतु यह भी एक कठोर सत्य है कि वर्तमान में भारत की सामाजिक स्थिति ठीक नहीं है। चोरी, डकैती, भ्रष्टाचार, घरेलू हिंसा, नारियों का तिरस्कार, प्रदूषण, आदि कुरीतियों ने भारतीय समाज पर आक्रमण कर दिया है। यदि इस स्थिति को बदला न गया तो भारत की छवि बिगड़ जाएगी। अतः कर्तव्यनिष्ठ नागरिक होने के नाते यह हमारा कर्तव्य है कि हम भारत को विश्व फलक तक पहुँचाएँ। [CBSE Topper 2015]

3. दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर किसी एक विषय पर लगभग 100 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए।

जीवन में श्रम की महत्ता

- श्रम के विभिन्न रूप
- प्रगति का मूलमंत्र
- श्रम के आदर्श

उत्तर

जीवन में श्रम की महत्ता

मनुष्य सदा प्रगति-पथ पर आगे बढ़ना चाहता है। इसके लिए जीवन में एक अति-महत्वपूर्ण अंग की आवश्यकता है - श्रम। हम श्रम से ही सफलता प्राप्त कर सकते हैं। श्रम के विभिन्न रूप हैं। कुछ लोग मानसिक श्रम करते हैं जिससे वे बुद्धि का विकास करते हैं। अन्य लोग परिश्रम करके अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं। अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए केवल एक ही मूल मंत्र - परिश्रम। कठोर साधना के पश्चात ही महान लोग प्रसिद्ध हुए हैं। हमारे अनुसंधान और आविष्कार भी जुड़े हुए हैं। श्रम के महत्व को समझते हुए हमें भी अपार श्रम करना चाहिए। [CBSE Topper 2016]

4. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 80-100 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए।

मन के हारे हार है मन के जीते जीत

- निराशा अभिशाप
- दृष्टिकोण परिवर्तन
- सकारात्मक सोच

उत्तर

मन के हारे हार हैं मन के जीते जीत

संघर्ष ज़िंदगी का पर्याय है। सबके जीवन में अनेक कठिनाइयाँ बाधा बनकर खड़ी होती हैं जिन्हें हम अपनी मेहनत, लगन एवं साहस से पार कर सकते हैं। हम सब को कभी न कभी त्रासद परिस्थितियों की दरिया से बहना पड़ता है पर तट पर वही पहुँचते हैं जो अपने मन को मज़बूत कर लगातार परिश्रम करते हैं, कभी घुटने नहीं टेकते, हताश नहीं होते। बस आगे बढ़ते ही जाते हैं। जबतक हमारा मन हार न माने तब तक हमारा शरीर भी हार नहीं मानता। निराश होकर रुदन करना विलाप करना व्यर्थ है, आवश्यकता है अपना दृष्टिकोण बदलने की। अगर मन में आस्था और लगन हो तो पहाड़ों को भी हिलाया जा सकता है। हमें अपनी सोच को सदैव सकारात्मक रखते हुए इस विश्व के [illegible] में एक नया इतिहास रचना है। हमारा मन ही तो है जो हम पर राज करता

है। यदि यह सदैव सकारात्मक एवं साहसी रहेगा तो हमें उत्कर्ष का आनंद चखाएगा परंतु यदि यह हार मान कर मुरझा गया तो वही हमारा जीवन व्यर्थ हो जाएगा। मसलन एक युवती की टाँगे टूट गई थी पर उसने हार नहीं मानी, वही महिला अपनी एक टाँग के सहारे एवरेस्ट के शिखर पर पहुँची और भारत का झंडा लहराया। ऐसा ही साहसी मन हो तो जिंदगी में कोई भी काम मुश्किल नहीं। इसलिए मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।

[CBSE Topper 2018]

5. निम्नलिखित विषयों में किसी एक पर संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

कम्प्यूटर हमारा मित्र

- क्या है
- विद्यार्थियों के लिए उपयोग
- सुझाव

उत्तर

कंप्यूटर हमारा मित्र

विज्ञान के क्षेत्र में मानव ने कितना विकास हो चुका है। आए दिन नए-नए उपकरण। ऐसा ही एक उपयोगी यंत्र है कंप्यूटर। कंप्यूटर ने हमारे जीवन को कितना सरल बना दिया है। इस द्वारा कठिन बहुकार्य कंप्यूटर के सहायता से चुटकी-से-चुटकी कर पाते हैं। कंप्यूटर मनोरंजन में भी सहायक होता है। हम कंप्यूटर पर गाने सुन सकते हैं, कंप्यूटर ने कार्यालयों में कार्य करना बेहद सरल बना दिया है। अस्पतालों में, बैंकों में, स्कूलों में आदि अनेक जगहों में कंप्यूटर ने जादू कर रखा है। अब तो कंप्यूटर के बिना जीवन बिल्कुल असंभव सा लगता है। टिकिट बुक करना, नई-नई चीजें सीखना आदि सभी कार्य झट से हो जाया करती हैं।

परंतु हर वस्तु की लाभ और हानि दोनों होते हैं। इसलिए कंप्यूटर का भी अधिक प्रयोग हमारे सेहत के लिए हानिकारक है।

बच्चे कंप्यूटर पर खेला करते हैं परंतु अधिक देर खेलने पर आँखों में विकार हो जाया करते हैं।

अंत में यह कहना उचित है कि कंप्यूटर हमारा बहुत ही अच्छा मित्र तब ही बन सकता है जब हम इसका उचित उपयोग करें।

[CBSE Topper 2017]